THE DEPUTY CHAIRMAN: I am reminding you, Mr. Reddy, once again. Pleased sit down. (*Interruptions*) Please conclude.

SHRI B. KRISHNA MOHAN: I am concluding. There is a break-down of the law and order machinery there. Innocent people are put to a lot of harassment. I think the State Government has lost control over the State police and the police are acting like mad dogs. I request the Government kindly to send a parliamentary, delegation consisting of all parties to that village and report to Parliament. (*Interruptions*).

SHRI R. RAMAKRISHNAN (Tamil Nadu): On a point of order. I respectfully point out that in the Rajya Sabha, the House of Elders the Council of States—with due respect to Mr. Madhavrao Scindia who is busily engaged in conversation with Shri Kalpnath Rai—there should be a Minister of the Cabinet rank present all the time. There is a roster duty drawn. Of course, Mrs. Alva has gone to the Chairman with your permission; I don't mind about that. But a Minister of the Cabinet on roster duty should be there. Please direct them to be present and pay adequate respect to this House. Thank you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: It will be conveyed.

REFERENCE TO THE REPORTED EXPORT OF SKULLS OF CHILDREN

श्री कैलाश पति मिश्र (बिहार) : महोदया, पिछले 15 जून को पटना मे प्रकाशित "पाटिलपुत्र टाइम्स" हिन्दी दैनिक में फोटो सहित एक ऐसा समाचार छपा हैं कि छोट – छोटे बच्चों की गरदनें काट करके उनका मस्तक उबालकर उनका व्यापार किया जा रहा है । सारे बिहार में आंतक का वातावरण छा गया है। एक से बढ़कर एक समाचार आने शुरू हुए है । फिर पता लगता है कि यह नर पिशाच जो शिशुओ के मस्तक का व्यापार करते है, जिन्दा शिशुओं का अपहरण करते हैं, उन्हें नशा खिलाकर बेहोश कर देते हैं और बीच गंगा में ले जाकर उनकी गदनें काट कर उनका धड़ पानी में डाल दिया जाता है । फिर पता चला है कि लगभग एक महीने में 200 पटिया छोटे छोटे शिशुओं के मस्तक की भर कर कलकत्ता भेजी जाती हैं । फल बेचने के नाम पर उनका व्यापार चलता है और कलकत्ते के अंदर बड़े बड़े तस्कर वहां से उन पेटियों को छुड़ाते है और विदेशों के अन्दर निर्यात करते है। यह देखकर आश्चर्य लगता हैं कि नर कंकाल का निर्यात करने के लिये देश के अंदर 30 लोगों को लाइसेंस मिला हुआ है, उसमें से अकेले दस बिहार में हैं, दस तो लाइसेंस लिये हुए है और दस ऐसे हैं जो बिना लाइसेंस के चोरी छिपे ही यह धंधा कर रहें है ।

दुर्भाग्य यह है कि दुनिया के अंदर भारत एक ऐसा देश है जो नर कंकाल का निर्यात आज दुनिया में कर रहा है। आस्ट्रेलिया में केनेडा में, अमरीका में, दुनिया के कई देशों के अदर शिशुओं की खोपड़ी की आज बहुत ज्यादा मांग हो गई है । देखने के बाद ऐसा पता लग रहा है कि एक वर्ष के अंदर पांच से सात हजार शिशुओ का बिहार के अंदर अपहरण हुआ है । यह अपहरण कहां होता है ? कही गरीब आदिवासियों के मुहल्ले से या गांव में जाकर अपहरण कर लिया जाता है कहीं हरिजनों के यहां से अपहरण कर लिया जाता है । थाने में कुछ रिपोर्ट लिखी जाती है, कुछ नही लिखी जाती है । अपहरण करने के बाद उन बच्चों का क्या होता है अब जाकर वह चित्र सामने आया है ।

महोदया, मैं दो अखबारों के चित्र सदन की पटल के ऊपर रखना चाहता हू ।

उपसभापति : सदन की पटल पर नहीं रखिये सिर्फ बता दीजिए कि क्या हुआ है ।

श्री कैलाश पति मिश्र : इन चित्रों को देखने के बाद किसी का भी हृदय कांप उठेगा । यह चित्र बता रहे हैं कि यह छोटे छोटे बच्चे बिलकुल जीवित उनका चेहरा है । मैं उस पत्रकार महोदय को धन्यवाद देना चाहता हू और उस पत्रकार फोटोग्राफर को भी धन्यवाद देना चाहता हूं। मुझे पता चला है कि उसके जीवन के ऊपर

[श्री कैलाश पति मिश्र]

भी खतरा खड़ा हो गया है, रोज उसको धमकियां मिल रही हैं और किसी दिन उस पत्रकार और फोटोग्राफर की हत्या भी हो जाती है ।

यह देखकर आश्चर्य लग रहा है कि जितनी गम्भीरता से इस सवाल को सरकार को अपने हाथ में लेना चाहिए था, उतनी गम्भीरता से उसने इसे लिया नहीं है । एकाध व्यक्तियों की श्मशान घाट पर गिरफ्तारी हो गई, एकाध जगह छापामारी हुई, हालांकि थोड़ी सी छापामारी में, जहां भी हुई है, वहां भी नर कंकाल से भरी पेटियां उपलब्ध हो रही है लेकिन जहां बिहार के कोने-कोने में ऐसे युवक काम कर रहे हैं, बिहार में वहां तस्कर बैठे हुए हैं कलकत्ते के अंदर जहां से व्यापार होता है, यहां से जाता है और कलकत्ता के तस्कर उसको लेकर विदेशों में व्यापार करते है । मैं बिहार सरकार की क्षमता को जानता हूं । बिहार सरकार के अंदर ऐसी क्षमता नहीं है कि इतनी बड़ी साजिश इतने बड़े षड्यंत्र के ऊपर वह काबू पाये । आश्चर्य यह लग रहा है कि केन्द्र सरकार ने अभी तक उसके बारे में कोई नोटिस नही लिया है, उसके बारे में कोई कदम नहीं उठाया है ।

मैं तो चाहता हूं महोदया, कि इसके ऊपर मंत्री महोदया वक्तव्य दें । यह केवल एक छोटा सा सवाल नहीं है, मैंने तो इसके ऊपर कालिंग अटेंशन दिया था, लेकिन जब नामंजूरी हुई तो उसे स्पेशल मेंशन में बदल दिया गया, तो स्पेशल मेंशन के माध्यम से मैं इसको उठा रहा हूं । लेकिन मुझे आश्चर्य है कि केन्द्र सरकार ने आज भी अगर अनसुनी कर दी, नर-कंकाल के लिए लोगों को निर्यात करने के लिए जो लाइसेंस दिया गया है, उसे रद्द नही किया, पूरी इस घटना की जांच, छान-बीन नहीं की, उस पत्रकार के जीवन की सुरक्षा व्यवस्था नही हुई, उस अखबार के सम्पादक के जीवन की सुरक्षा व्यवस्था नहीं हुई, तो यह ऐसा जघन्य अपराध है । जिसका कोई उत्तर नहीं है । कल्पना करने के बाद रोमांच हो जाता है । राम, कृष्ण का देश, बौद्ध और तीर्थंकर का देश, गांधी का देश और उसमें हर कदम के ऊपर इतने प्रकार के जघन्य पाप हो रहें हैं कि उन्हें देखने के बाद किसी का भी हृदय कांप उठेगा । महोदया, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आप मंत्री महोदय से आग्रह करें कि वे इसका उत्तर दें और सरकार इसका उत्तर सदन के अन्दर दे ।

उपसभापति : यह बहुत सीरियस मैटर आपने रेज़ किया है । सरकार इस पर ध्यान देगी ।

श्री सुल्तान सिंह (हरियाणा) : यह बड़ा सीरियस मामला यहां पर उठाया गया है । यह इतना सीरियस है कि सारे मुल्क में इससे सनसनी पैदा हो जायेगी । मैं आपके मारफ्त सरकार से चाहूंगा कि यह जो इन्होंने मामला उठाया है, इसका तुरन्त जवाब आना चाहिए । अगर इसका तुरन्त जवाब नही आया तो सारे मुल्क में एक भ्रम पैदा हो जायेगा यह बहुत खतरनाक बात है । हमारे चन्द्र शेखर जी यहां पर बैठे हैं, वे बिहार के मुख्य मंत्री भी रह चुके हैं और यहां मंत्री है । इस मामले पर सरकार की तरफ से आज इसका जवाब आना चाहिए । नहीं तो सारा मुल्क जब इस बात को पढ़ेगा तो सारे मुल्क में वाहि-वाहि हो जायेगी कि इतना सीरियस मामला सदन में उठाया गया था ।

उपसभापति : इस मामले पर न सिर्फ जवाब देना चाहिए, बल्कि इस पर एक्शन भी होना चाहिए ।

पूर्ति और वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री चन्द्र शेखर सिंह): यह मैं अभी कोई सरकार की तरफ से इसके बारे में स्पष्टीकरण नहीं दे रहा हूं, लेकिन यह खबर आज से कुछ दिन पहले पटना के एक अखबार में निकली थी । लेकिन दूसरे अखबार ने वहां इसकी पूरी जांच करके यह तथ्य सामने लाया कि ये सारी बातें निराधार थीं और एक खास मकसद से इस तरह का चित्र लिया गया, और खबर लाई गई तथा यह सूचना प्रसारित

की गई । माननीय सदस्य भी बिहार के हैं और मैं जानता हूं कि उन्हें इसकी चिंता होगी, लेकिन यह किस्सा वैसा नहीं है जैसा कि आम तौर से समझा जा रहा है, फिर भी सरकार विधिवत इसके संबंध में कोई विचार करेगी, कोई मौका देखेगी तथा इसके बारे में कुछ विचार करेगी ।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (मध्य प्रदेश) : यह एक्सपोर्ट के लायसेंस दिए गए हैं और यह बात सही है कि दस बिहार के ही इस प्रकार के एक्सपोर्टर्ज हैं, क्योंकि उसी के पीछे ये सारी चीजें होती हैं, बेसिक चीज तो यह है ।

उपसभापति : सरकार इस पर ध्यान देगी ।

SHRI S. W. DHABE (Maharashtra): You must direct the Government to make a statement.

श्री कल्पनाथ राय (उत्तर प्रदेश) : महोदया, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आप इस मामले में सरकार को डायरेक्टिव दें कि वह इस संबंध में बयान दे जो कि कंसर्ड मिनिस्टर हैं वे बयान दें ।

उपसभापति : यह मैटर सीरियस है और सरकार इस बारे में ध्यान देगी ।

STATEMENTS BY MINISTERS

(i) Collision of 138 up Amritsar-Bilaspur Chhatisgarh Express with down Tughlakabad goods Train at Raja-Ki-Mandi Station of Central Railway on 13th June, 1985.

(ii) Collision of a private Bus with a goods Train at A manned level crossing between Dr. Radhakrishnan Nagar and Morwani Stations of Western Railway on 16th June, 1985.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI MADHAVRAO SCINDIA): Madam, I deeply regret to apprise the House of two unfortunate train accidents on 13-6-1985 at Raja-Ki-Mandi near Agra and on 16-6-1985 at Dr. Radhakrishnan Nagar near Ratlam.

On 13-6-1985, 138 Up Amritsar-Bilaspur Chhatisgarh Express bound for Bilaspur collided with a goods train bound for Tughlakabad at Raja-Ki-Mandi station. The accident occurred a few minutes after Chhatisgarh Express started from Raja-Ki-Mandi station where it had a scheduled stoppage. As a result of this collision, 40 passengers lost their lives, 15 sustained grievous, 18 simple and 9 trival injuries. The cost of damage to Railway property has been estimated at Rs. 6,30,000/- approximately.

A Medical Relief Van was immediately rushed from Agra Cantt. which arrived the site with 2 railway doctors and other para-medical staff. Simultaneously, assistance was sought from Sarojini Naidu Hospital, Dr. Sarkar's Nursing Home and the army authorities for medical aid Civil, army and railway doctors rendered first aid and rushed the injured to local hospitals at Agra.

I alongwith Member Traffic, Railway Board, rushed to the site of accident for overseeing the relief arrangements. I called on the injured who were admitted in the local hospitals. Divisional Railway Manager, Central Railway, Jhansi alongwith other senior officers including the Medical Superintendent rushed to the site from Jhansi immediately on being informed about the accident. General Manager, Chief Traffic Safety Superintendent and the Commissioner of Railway Safety, Central Circle, also reached the site later from Bombay.

For relief operations, Railway Accidents Relief Train was sent from Agra Cantt. Civil authorities, with the help of the local residents also gave help in the rescue operations.

Ex-gratia relief was arranged on the spot to the next of kin of those who died and to the injured persons.

An *ad-hoc* Claims Commissioner is being appointed to decide the claims for compensation in this case.